मन थामो अपने मन को

शाम के यही कोई छह बज रहे थे।हल्का हल्का धूँधलका छा चुका था।मै लोगों की नजरें बचाता धईया रोड पर आगे बढा जा रहा था।मेरे पास एक टार्च भी थी जिसे मै जलाना नही चाह रहा था।जब तब मेरे पॉव खडों मे जा पड़ते थे।कई बार मुझे पत्थरों से ठेस भी लगी.लेकिन मै भीम से वायदा कर चुका था कि मै ठीक साढे छह बजे धईया के प्राइमरी स्कूल पर पहुँच जाऊँगा।

जब भी कोई सामने से आता दिखता था.मै झट से रोड का दूसरा किनारा ले लेता था।

अगर कोई पहचान लिया तो मै उससे क्या कहूँगा!बस दो ही जवाब मुझे सूझ रहे थे।

ःरानी बॉध बनवारी की दुकान पर जा रहा हूँ या फिर अपने धोबी के पास जा रहा हूँ।

धईया रोड के लिए ये दोनो कारगर जवाब थे.पर मुझे राममंदिर से थोड़ा पहले ही दॉई ओर की पगडंडी ले लेनी थी।अगर वहॉ कोई टकरा गया तो!

दूसरे दिन ही पूरे धनबाद मे मेरा नाम भी चरित्रहीनों मे लिया जाने लगेगा।फिर तो मेरा कल्याण ही कल्याण था।

जब मै पहली बार धईया गेट के चौकीदार दुक्खू की नजर बचा कर धईया मे द्वारिका की दुकान पर गया था तब मै सात साल का था।पता नही मॉ को कैसे इसका पता चल गया।उन्होने मुझे मारा तो नही.पर बड़ी मजबूती से मेरी दोनो बॉहे पकड़ कर अपनी लाल ऑखों से मुझे घूरते हुए कहा थाःअगर मै फिर एक बार भी सुनी कि तुम धईया गए थे तो मै तुम्हारी और अपनी जान एक कर दूँगीं।

मैने उनसे पूछा भीःपर क्यों!

दहाड़ते हुए बोलींःधईया गेट के आगे दूर दूर तक जन्गाली और गन्दे लोग रहते हैं।तुम वहॉ फिर कभीं नही जाओगे।

हायर सेकेन्ड्री तक मैने भी अपना वचन न तोड़ा.पर अपनी मॉ का मुझ पर लगाया गया ये प्रतिबन्ध मेरे समझ के बाहर का था।जिस बूढवू पंडित को मॉ यदा कदा घर पर बुलवा कर पूजा पाठ करवाती थीं.वो भी तो धईया मे ही रहते थे।रामधनी और द्वारिका की दुकाने भी धईया मे ही थी।ये दोनो हर वर्ष होली के दिन हमारे पहले मेहमान होते थे।हमारी दाई और धोबी भी धईया मे ही रहते थे।राम पाठक गिरी जी गुणामल घोषाल बाबू फटीक बाबू और न जाने कितने लोग जो इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे काम करते थे और धईया मे रहते थे।न तो उन्हे वहॉ के जन्गाली लोगों से कोई परेशानी थी और न ही गन्दे लोगों से।

स्कूल जाने से पहले और स्कूल से वापस आने के बाद मै नियम से अपने मेनगेट पर जा कर खड़ा हो जाता था और धईया गेट से हो कर इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के अहाते मे आने वालों को देखता रहता था।

धईया से लगी न जाने कितनी छोटी बस्तियॉ मेमको बरवडा या उससे भी आगे तक फैली हुई थी।जो बस्ती शहर से लगी या बहुत दूर न थीं.वहॉ के लोग खोट्टा नाम की भाषा बोलते थे.जो बंगाली से थोड़ी बहुत मिलती जुलती थी।यहॉ के रहने वालों को शहर या खदानो मे छोटा मोटा काम मिला हुआ था।यहॉ की औरतों को भी बर्त्तन मॉजने या झाड़ू बुहारू का काम मिला हुआ था।परन्तु जो बस्तियॉ शहर से काफी दूर थीं.वहॉ के लोगों को बस ठिकेदारों के यहॉ ही काम मिल पाता था और वो भी ईंटे और गर्रे ढोने का या फिर वो हीरापुर हटिया मे अपनी उगाई सब्जियॉ बेचने आते थे।

हमारे बाउन्ड्री की पीछे की दीवार आगे जा कर थोड़ी नीची हो गई थी।इसके दोनो तरफ ईंटे पत्थर जोड़ कर कौरंगापट्टी की औरतें स्टाफ क्वाटरों मे बर्त्तन मॉजने आती थीं।हमारे बाउन्ड्री की दॉई दीवार से लगी न जाने कितनी झुग्गियॉ थी!इन्ही झुग्गियों के सामने छोटी मोटी गुमटियॉ डाल कर रामधनी द्वारिका गिरी जी मुबारक मुस्लिम हराधन रजक आदि अपना छोटा मोटा धन्धा किए बैठे थे।इस दीवार के समानान्तर ही धईया रोड था।

मै अक्सर पीछे की दीवार पर भी जा चढता था।दूर दूर तक पुटुस के जंगल फैले हुए थे जिनसे होते हुए एक सर्पीली पगडन्डी कौरंगापट्टी तक जाती थी।ये लोहारों की बस्ती थी.जो थोड़ी बहुत मजदूरी पर खूरपी और कूदालें बनाते थे।इनके बनाये औजार पूरे धनबाद मे बेचे जाते थे.पर इन्हे मजदूरी के नाम पर बनिये बस इतने ही पैसे देते थे कि ये शाम को एकाध ठर्रा की बोतल खरीद सकें।

कौरंगापट्टी से थोड़ा पहले एक तालाब भी मुझे दिखता था जिसका पानी तो नजर न आता था.पर नहा कर बाहर आते लोग दिखते थे।

हमारे घर के सामने वाली सड़क पर सुबह के छह बजे से ही चहल पहल शुरू हो जाती थी.जो शाम के सात बजे के आसपास ही टूटती थी।फिर एक भयानक सा सन्नाटा चारो ओर छा जाता था।

मै बड़ी अधीरता से फिर दूसरी सुबह के होने का इन्तजार करते करते सो जाता था।

धनबाद के मूल निवासी आदिवासी ही थे.जो दो वर्गो मे बॅट चुके थे।एक वर्ग शहर से जुड़ कर सभ्य होता चला जा रहा था और दूसरा अपनी संस्कृति और भाषा से आज तक जुड़ा हुआ था।

दूसरे वर्ग को धनबाद तबीयत से लूट रहा था।न सिर्फ उनकी सब्जियॉ.बल्कि उनके मेहनत भी।इन्हे पैसों तक की पहचान न थी और न तो इनकी भाषा ही कोई समझता था।जो पकड़ा दो पकड़ लेते थे फिर भी रोज सुबह अपने दॉयें कान पर एक कनेर का फूल खोसे अपने ऑचल से अपना स्तन ढॅके ये दूर दूर की बस्तियों से समवेत गाना गाते शहर आते थे और जीतोड़ मेहनत करके ऐसे ही अपनी बस्तियों तक वापस लौट जाते थे।इनके मर्द पता नहीं क्यों शहर आने से घबराते थे!

इन औरतों का अधनंगा बदन धनबाद के लिए एक आकर्षण तो था.पर इनकी अस्मिता से खेलने की हिम्मत धनबाद मे न थी।इनका रूप और कद किसी मेनका से कम न होता था।बस इनके पास गोरी चमड़ी न थी।मैने सुन रखा था कि हल्की छेड़ छाड़ पर भी ये रणचंडियॉ बन जाती हैं।

पहले वर्ग की भी ज्यादेतर औरतें ही शहर आती थी जिनकी दो बातों पर मेरा ध्यान सबसे पहले ॲटका!इनके रंग क्यों साफ हैं!इनके खोट्टा भाषा का कब प्रार्दुभाव हुआ और कैसे हुआ!

मै सतरह साल का हो चला था।मॉ के बन्धन थोड़े ढीले हुए नही कि मै धईया रोड पर आना जाना शुरू कर दिया.लेकिन सिर्फ धईया रोड पर।

अपने खाली समयों मे घर के पीछे की दीवार पर बैठना एक तरह से मेरे लिए नियम ही बन चुका था।दीवार को रगड़ते ही हमारे बगान मे एक नीम का बड़ा विशाल पेंड़ था.जिसके बलखाते तने पर चलते हुए मै दीवार पर चढ जाता था और उसके एक दूसरे तने से पीठ टिका कर वहॉ

बैठ जाता था।
अमूमन हमारी दाई धईया गेट से हो कर आती थी।दूसरों की तरह उसके पास तीन चार घरों के काम न थे।वो बस हमारे घर पर ही काम करती थी।पॉच बच्चों की मॉ होने के बावजूद उसने अपना शरीर ढलने न दिया था।तीस बत्तीस उसकी उम्र रही होगी।सीधे पल्ले मे वो साड़ी पहनती थी।अक्सर उसकी नजरें झुकी ही रहती थी।वो बोलती भी बहुत कम थी।जो काम उसे बताया गया था,चुपचाप करके चली जाती थी।
हमारे घर के पीछे की दीवार कारखाने के पीछे से होती हुई क्लर्क क्वाटरों से भी आगे तक गई हुई थी।एल ब्लॉक के दॉई ओर इसी दीवार से लगे कारखाने के कम से कम दो सौ क्वार्टर तो रहें ही होंगे।ज्यादेतर इनमे बिहार के दूसरे अंचलों से आए लोग रहते थे।इन क्वार्टरों मे उन दिनो पाखाने न बने थे।लोगबाग अपना लोटा थामे इसी दीवार को लांघ कर धईया मे जाते थे।इनमे से कई तो हमारे घर के पीछे तक आ धमकते थे और किसी झाड़ के पीछे बैठ जाते थे।इन्ही के लिए मै ऐंठी मोटी मोटी रस्सियॉ भी साथ रखता था।ये किसी झाड़ के पीछे बैठे नही कि इन पर घुमा कर अपनी रस्सियॉ फेंकता था।सॉप के डर से ये अपना लोटा थामे,कान मे जनेऊ लपेटे कुँलाचें भरने लगते थे।मै धीरे से नीचे उतर आता था और फिर घन्टों हॅसता रहता था।धनबाद मे कोयलों की खाने तो थी हीं,सॉपों बिच्छूओं की भी वहॉ भरमार ही थी।
हमारे घर पर सुबह के सारे काम निबटाने मे हमारी दाई को ग्यारह तो बज जाते थे।कभीं कभार वो भी इस दीवार को लॉघ कर अपने घर जाती थी।
ऐसे ही एक किसी शनिवार को मै अपनी दीवार पर बैठा हुआ था कि अचानक ग्यारह बजे के आसपास चन्दन सिंह को दीवार लॉघते देखा।दॉये हॉथ मे एक लोटा थामे और एक कान पर जनेव चढाए।पगडंडी से जरा सा हटकर वो एक झाड़ के पीछे जा बैठे।तभी मैने अपनी दाई को भी दीवार लॉघते देखा।मै चन्दन सिंह पर अपनी रस्सी फेंकने ही वाला था कि चौंका।हमारी दाई भी अपनी पगडंडी छोड़ कर उसी झाड़ की ओर बढी,जहॉ चन्दन सिंह बैठे थे।
इस घनी झाड़ के पीछे का सारा खेल तो मै नही देख पाया,पर जो मै देख पाया वो कुछ इस तरह का था।
चन्दन सिंह हमारी दाई की खुली साड़ी उसकी मदद से जमीन पर फटाफट बिछाये जा रहे थे।खेल समाप्त होने मे शायद पॉच मिनट भी न लगे होंगे।जब पगडंडी पर दाई आई तो वो अपनी ब्लाउज मे कुछ खोंसे जा रही थी।जब चन्दन सिंह पगडंडी पर आए तो वो अपने कान से जनेव उतार रहे थे।
ये मेरे जीवन की पहली अर्द्ध पोर्नो फिल्म थी।
इस घटना के बाद मै खास करके शनिवार और रविवार को असमय लोटा थामे दीवार लॉघने वालों या फिर अकेली काम से वापस आने वाली जवान औरतों पर अपना ध्यान टिकाया।
वर्षो तक शायद ही ऐसा कोई शनिवार या रविवार का दिन रहा होगा जब मुझे किसी घनी झाड़ के पीछे चन्दन सिंह और अपनी दाई से मिलता जुलता दृश्य देखने को न मिला होगा।
ये सब मेरी अपनी ऑखों से देखी गई बाते है।सुनी सुनाई बातों का निचोड़ ये थाःतुम्हे जो भी पगडंडी सामने दिख जाए,उस पर बढ जाओ।ये पगडंडी तुम्हे किसी न किसी बस्ती मे ले ही जाएगी।फिर जिस झुग्गी का मन करे,उसके दरवाजे की कुंडी खड़का दो।दरवाजा एक बुढिया खोलेगी और बड़े प्यार से तुम्हे एक धूप्प अन्धेरे कमरे मे एक नंगी चौकी पर ले जाके बैठा देगी।इस तरह के कमरों मे तुम्हे एक भी खिड़की न मिलेगी।दिन मे भी ऐसे कमरों के ताखों पर किरासन तेल वाली ढिबरियॉ जलती रहती है।
चौकी पर बिठा कर वो बुढिया तुम्हारे सामने खड़ी हो जाएगी।पहले तुम अपनी उॅगलियों के इशारे से लड़की की उम्र बताओगे फिर वो उॅगलियों के इशारे से उसकी कीमत।अमूमन वो तुमसे बीस टाका मॉगेगी।तुम इशारे से उसे दस टाका बता कर चलने का उपक्रम करना।वो तुम्हे जाने न देगी।दरवाजा भेड़ कर चली जाएगी।फिर कुछ ही मिनटों मे तुम्हारी मेनका तुम्हारे कमरे मे आ जाएगी।ये दस रूपये बस एक खेप के होते है।दूसरा खेप लगाओगे तो फिर दस टाका।
अगर इस मेहमान वाले कमरे मे कोई दूसरा मेहमान पहले से ही विराजमान है तो वो बुढिया तुम्हे किसी दूसरी झुग्गी के सामने ले जा कर खड़ा कर देगी।
बस एक बात का ख्याल रखना।हो सके तो अपनी नाक मे रूई या कोई कपड़ा लत्ता घूसेड़ ठूॅस लेना,वरना इन मेनकाओं के पसीनों और कड़वा तेल की मिश्रित बदबू से सप्ताहों तक तुम्हारा दिमाग झनझनाता रहेगा।
धीरे धीरे मै इन सुनी सुनाई बातों पर विश्वास करने लगा था।
मेरे सामने दो समस्यायें थीं,बदनामी और मॉ की।एक और समस्या भी मेरे सामने थीःमेरा अपना व्यक्तित्व कुछ इस तरह से ढल चुका था कि मै हर तरह के शोषण के बिल्कुल ही खिलाफ था,जिसका थोड़ा बहुत अंश आज तक मेरे स्वभाव मे है।
जहॉ भी मुझे शोषण दिखा,वहॉ मैने सिर्फ अपने मन को पढा।शरीर की भाषा को मैने मुखर न होने दिया।
राममंदिर के बगल मे एक विशाल बरगद पेंड़ के नीचे खड़ा मै सामने की पगडंडी को अपलक देखे जा रहा था जिसे मुझे धईया के प्राइमरी स्कूल तक पहॅुचाना था।मेरे पैर कॉप रहे थे।पगडंडी पर पैर धरने की हिम्मत ही न हो रही थी।मुझे लग रहा था कि इस पगडंडी पर पैर धरते ही मै ढेर हो जाऊॅगा,फिर मुझसे उठा न जाएगा।मन ही मन मै अपने को कोसे जा रहा था।मुझे भीम का आमंत्रण स्वीकारना ही न थाःदादा आज आप को वास्ते रत्ती मुर्गामांसो रॉधा है।सौन्ध्या मे आप को हमारे बाड़ी मे आना है।
बिना सोचे विचारे मैने उससे पूछाःकितने बजे भीम!
ःवोही सात बजे को आसपास।
समय बड़ा अनुकूल था।मैने हॉ कह दिया।
ःहम और नोकूल आप को बाड़ी से लेने आएगा।
ःअब मै भड़काःऔर अगर मॉ को पता लगा तो वो तुम दोनो भाईयों को उस सामने वाले महुए के पेंड़ से बॅधवा कर दुक्खू से कोड़े लगवाएगी।
ःआप को बात तो दुरूस्त है दादा।फिर!
ःऐसा करना कि तुम दोनो भाई मुझे प्राइमरी स्कूल के सामने ठीक सवा छ बजे मिलना।बस समय से वहॉ आ जाना।
ःभालो दादा।हम ऊॅहा पौने छह बजे ही आ थाकेगा।

ःठीक है।अब जाके अपना काम करो।
किसी तरह हिम्मत बॉध के दॉये बॉये झॉक कर मैने सामने वाले पगडंडी पर अपने पॉव रखे।सॉप बिच्छूओं का डर तो मुझे था ही.ऊपर से कई जगह पुटुस के झाड़ भी पगडंडी तक बढ आए थे जिन्हे हटाता मै आगे बढा जा रहा था।न जाने मुझे कितनी खरोंचे लग चुकी थी।दस मिनट के बाद मेरे सामने एक छोटा सा खुला मैदान था।ज्योंही मै इस खुले मैदान मे आया.मुझे धईया स्कूल दिखा जिसके बरामदे मे भीम और नकूल मेरे इन्तजार मे खड़े थे।मुझे देखते ही दोनो भागते हुए मेरे पास आए।घुटने तक बॅधी धोती.सैन्डो की बनियान.सर पर अॅगोछी पैरों मे बिना लैश के चमड़े की बूटें और हॉथों मे लम्बी लम्बी बॉस की लाठियॉ।इतना ही नही.दोनो के कन्धों पर बॉस की ही बनी धनुषें लटकी हुई थीं और कमर मे दो दो तीर भी।
अब इनकी सुरक्षा में मै एक पगडंडी पर निर्भय बढा चला जा रहा था।अब मुझे पुटुस के झाड़ तक न हटाने पड़ रहे थे।
आधे घन्टे से ऊपर हो चले थे.पर अभीं तक दूर दराज तक किसी बस्ती का नामोनिशॉ तक न था।
मेरे मन पर पड़ा एक पत्थर हट चला था।जिस पगडंडी पर मै बढा जा रहा था वो मुझे एक दो भाईयो के एक समवेत परिवार मे ले जा रहा था और इस परिवार मे मुझे खाने का न्यौता मिला था जो मुझे बड़ा अभिभूत किए जा रहा था।मुझे अब न अपने देखे जाने का डर था और न पहचाने जाने का।फिर इन बातों की अब कोई सम्भावना भी न थी।
पगडंडी का सफर खत्म होते ही मुझे कई झुग्गियॉ नजर आई।
भीम ही बोलाःहमारा गॉव आ गया दादा।ऊ सामने वाली बाड़ी हमरी है।
ःक्या नाम है तुम्हारे गॉव का भीम!
ःभेलाटांड़ दादा।
ःघर मे और कौन कौन है!
ःहमदोनों का जनाना और मॉ दादा।
इसके पहले कि मै और कुछ पूछता.हम एक कच्ची झुग्गी के दरवाजे के सामने खड़े थे।नकूल भोंकते कुत्तों को भगाने मे लगा था जो गुर्राते हुए मुझे चिड़ने फाड़ने की ताक मे थे।इनमे से कई तो आसपास की झुग्गियों पर जा चढे थे और वहीं से गुर्रा रहे थे।
भीम अपनी लाठी से दरवाजा खटखटा रहा था।मै उसके पीछे खड़ा दरवाजे के खुलने का इन्तजार कर रहा था।
दरवाजा एक बुढिया खोली ओर भीम को परे धकेल कर मेरी ओर मेरे घुटने छूने को बढी।
मै दो कदम पीछे हट कर उससे बस इतना ही कह पायाःआपनि कि कोरछेन!ःआप क्या कर रही हैं!ः
मुझे बस इतनी ही बंगाली आती थी।
अचानक वो ठिठक कर खड़ी हो गई और अपने एक हॉथ से मेरे बाल सहलाने लगी।उनका ऑचल ढल कर उनके कमर से नीचे लटक रहा था।उनके दो काले काले सूखे खुले स्तन मेरी ऑखों के सामने झूल रहे थे।उनकी झुरियों से भरे हॉथ उनके तीन चार पीले दॉत उनका करीब करीब गंजा सर मुझे ममता की सही अर्थो मे एक सही परिभाषा बताए जा रहा था।वो अपनी भाषा मे कुछ बड़बड़ाए भी जा रही थी.जो मेरी समझ के बाहर का था।
मेरा एक हॉथ थामे वो मुझे अपनी झुग्गी के एक कमरे मे लिवा गई जिसकी दीवारों से लगी मिट्टी की ही बनी चौड़ी पर कम ऊॅचाई की चौकियॉ बनी हुई थीं जिन्हे गोबर से लिपा गया था।चौकियॉ अभीं भी थोड़ी नम थी और गोबर की गन्ध अभीं भी ताजी थी।मेरे बैठने से पहले भीम अपनी पगड़ी खोल कर अपनी गमछी दोहरा करके मेरे लिए बिछा दिया।इस कमरे मे दो ताखे पर दो ढिबरियॉ जल रही थीं।कालीख से ये दोनो ताखे काले हो चले थे।
ठीक मेरे सामने एक आंगन था जिसके एक कोने मे दो कम उम्र की औरतें लम्बे घूॅघटों मे कच्चे चूल्हे पर एक काली अल्यूमिनियम के बटलोहिये मे मुर्गोमांस रांधने मे लगी हुई थीं।इस चूल्हे के पास के चूल्हे पर भीम की मॉ भी कुछ रॉधे जा रही थी।
दॉई तरफ मुझे दो और कमरे नजर आ रहे थे।वहॉ कोई दरवाजा तो न था पर इन कमरों के सामने एक अरगनी तनी थी जिस पर तरह तरह के लिथड़े पसारे हुए थे।ऑगन की कच्ची दीवारों मे भी कई ताखे बने हुए थे।वहॉ भी एक ताखे पर एक ढिबरी जल रही थी।ठीक मेरे सामने एक बिना दरवाजे का कमरा था।वहॉ बोरे का एक पर्दा लटक रहा था।ये शायद इनके राशन का कमरा था।पूरा मकान कच्चा था.फर्श भी मिट्टी की थी।छतों पर कच्चे हरे बॉसों पर सूखे पुआल बिछे हुए थे।
इसके पहले कि मेरा ध्यान कहीं और जाता.भीम एक ठर्रे की बोतल और तीन हैन्डल टूटी कपें लिए मेरे सामने आ कर खड़ा हो गयाःदादा आप कोभीं नोशा किया है क्या!थोड़ा दारू हमारे संग पियेगा!
ःठीक है.पर कप पूरा नही भरना।
नकूल के हॉथो मे तीनो कप पकड़ा कर भीम अपनी बोतल खोलने लगा.तभी एक औरत घूॅघट मे इस कमरे मे आई और एक अल्यूमिनियम की ही पिचकी थाली मे थोड़ा सा मीट मेरे बगल मे रख गई।
जब वो पलट कर जाने को हुई तब भीम अपने बॉये हॉथ से उसका एक बॉह थाम लिया।वो चुपचाप भीम के बगल मे खड़ी हो गई।
भीम को मस्ती सूझ रही थीःदादा को अपना मुखड़ा दिखाओ।
मै घूॅघट मे ना के स्वर मे उसके सर का हिलना देख रहा था।
इशारे से मैने भीम को उसे छोड़ने को कहा।वो फिर चूल्हे पर जा बैठी।
तीन साल पहले जब भीम का गवना हुआ था तो वो अपनी पत्नी को दिखाने के लिए हमारे घर लाया था।बड़ा कहने सुनने पर वो हमारे अहाते मे तो आ गई.पर बरामदे की सीढियॉ उससे न चढी गई।जमीन पर ही धम्म से बैठ गई।अपना घूॅघट हल्के से हटाकर अपना सर तिरछा कर वो मिनटों अपलक मॉ को ऐसे देखती रही जैसे वो साक्षात किसी देवी को देख रही हो।
अक्सर मै मॉ को ये कहते सुनता थाःअगर भीम की पत्नी का रंग जरा सा साफ होता तो वो अच्छे से अच्छे घर की खूबसूरत से खूबसूरत लड़कियों की काने काटतीं।
भीम के ठर्रे ने आधे कप के बाद ही अपनी जात बता दी थी।मुझे सम्हल जाना था जो मैने नही किया...

दूसरे दिन गई दुपहरी तक मै सोता रहा।जब मै उठा तो अपने आप को अपने विस्तर पर पाया।मेरे उठने की आहट पा कर भीम फटाफट एक कप चाय बना कर कमरे मे ले आया और मुझे पकड़ा कर सर झुकाए चुपचाप खड़ा हो गया और खड़ा ही रहा।मेरा सर अभी भी भारी था फिर भी एक चलचित्र की तरह पिछली शाम मेरे ऑखो के सामने तिर रही थी.पर धूँधले सितारों की शक्ल मे।
मेरी समझ मे ही नही आ रहा था कि मै पिछले शाम एक पक्की हवेली के आरामदेह विस्तर पर कैसे जा पहुँचा था!पलंग का पायताना पकड़े जो लड़की बैठी थी.वो आखिर कौन थी!मैने उसका नाम भी पूछा था और उससे ये भी पूछा था कि भीम कहॉ है और वो इस कमरे मे क्या कर रही है!पता नही उसने मेरे सवालों का कोई जवाव भी दिया या नही!मुझे उसका चेहरा तक भी याद न था।
पता नही कव मेरी ऑखें खुली! और मै गिरता पछाड़े खाता एक वहुत ही खूवसूरत लॉन मे था.जो मै हल्की विखरी चॉदनी मे देख रहा था।इस हल्की रोशनी मे ही मुझे एक बरामदा दिखा जहॉ मुझे कुछ लोग सोये दिखे।पता नही किन किन झाड़ियों का सहारा लेकर मै उस बरामदे की ओर बढा।चिल्लाकर भीम को पुकारा।सभी एक झटके मे जाग कर खड़े हो गए।
मै एक मोरपंखी की झाड़ के सहारे खड़ा था और भीम मुझे जूते पहनाये जा रहा था।
मै कव और कैसे अपने घर वापस आया! ये मुझे बिल्कुल याद नही था।
भीम अभीं भी मेरे कमरे मे सर झुकाए खड़ा था।चाय का खाली कप उसे पकड़ा कर मै एक कप चाय और लाने को कहा।
जब वो दुवारा चाय ले कर मेरे कमरे मे आया तो सख्ती से मैने उसे एक कुर्सी खींच कर बैठने को कहा।
गुस्सा मुझे अपने पर ही आ रहा था और खास कर के इस बात परःमेरे सर मे दर्द था और मुझे पिछली शाम की कई बातें याद नही आ रही थीं।ये चावल से बनी स्प्रिट एक ही घूंट मे मुझसे हवाई सफर करवाने लगी थी पर नहीं.मै छाने और टाने जा जा रहा था।
ःभीम मै घर तक कैसे आया!
ःहोम नोकूल और सिदाम आप को यहॉ लाया।
ःये सिदाम कौन है!
ःदादा मामूजात भाई है।
ःकरता क्या है!
ःझरिया के एक सेठ को हवेली मे चौकीदारी कोरता है!
ःये हवेली है कहॉ!
ःफ्लावर मील को सामने दादा।
ःमै वहॉ कैसे पहुँचा!
ःहोम अऊर नोकूल ऊँहा आप को ले गिया।
ःपर क्यों!
ःदादा! आप सो गिया था।हम आप को कहॉ ले के जाता!होमार पास विस्तर ऊस्तर तो है नही दादा।
ःऔर मेरे कमरे मे कौन सी लड़की थी!वो वहॉ क्या ढूँढने आई थी!
ःऊ तो रत्ती थी।मैने उसको आप को खुस करने को भेजा था।दारू मान्सो के बाद दादा कौन नही!!
ःऔर तुम्हारी पत्नी राजी हो गई!
ःराजी क्यों नही होती दादा!फिर आप हमरा खास मेहमान जो था।प्रोथा तो निवाहना ही पोड़ता है दादा।
मै थोड़ा सख्त हुआःये कौन सी प्रथा है!तुम मुझसे साफ साफ क्यों नही कहते!किस मतलब से मुझे अपने घर बुलाया था!किस मतलब से रत्ती को मेरे पास भेजा था!
एक अपराधी की तरह भीम अपनी नजरें झुकाये खड़ा था।
मै अपने विस्तर पर उठंग के बैठ गयाःभीम! मै सुन रहा हूँ।मुझे तुम अपनी जाली प्रथाओं मे न खींचना।मुझसे अगर झूठ सच किये.तो मेरा पारा चढेगा.फिर बॉधोगे तुम अपना वोरिया विस्तर।
ःदादा!आप को बात साहब सवसे जादा सुनता है।अगर आप उनसे एक बार बोलेगा तो हमको और नोकूल को सरकारी नौकरी मिल जाएगा।
ःतो ये सरकारी नौकरी पाने के लिए अपनी पत्नी को मेरे पास भेजा था!
ःजी दादा।
ःपर तुम तो प्रथा की बात कर रहे थे!
ःये कोई प्रोथा नही था दादा.वोन गेया है।आप लोगों को खुस करने को वास्ते आमार काछेर अपना जनाना के अलावा और क्या है दादा!एक आवेदोन लिखने को लिए भी होमसे हमारा जनाना का उमर पूछा जाता है दादा।
इससे आगे भीम से कुछ न वोला गया।सर की पगड़ी खोल कर अपने ऑखों के सामने रख लिया और उँकड़ू मेरे कमरे की फर्श पर बैठ गया।उसके जवड़े खींचे हुए थे।उसकी एक एक पसलियॉ कॉप रही थीं।
मै धईया गेट से ले कर रजिस्ट्रार साहव वाले गेट और मेन गेट से वॅधे इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के अहाते मे रहने वाले तथाकथित पढे लिखे शिक्षित समाज और ऊँची जाति और तवके के लोगों से जा उलझा था।
इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के क्लर्कस चपरासी चौकीदार और मज़दूर हमारे घर के पिछवाड़े शौचों के नाम पर जो कूकर्म कर रहे थे.उन्हे तो मैने अपनी ऑखों से देखा था।ओल्ड हॉस्टल के लड़कों द्वारा पुष्पा का समवेत वलात्कार भी किसी से छिपा न था।कई वंगाली क्लर्को का भी नियमपूर्वक कौरंगापट्टी मे आना जाना होता था।आए दिन लेक्चरारों और यहॉ तक के कुछ प्रोफेसरों का भी अपनी दाईयों पर टूट पड़ने के किस्से सुने जाते थे।बनवारी का तो ये हाल था कि वो अपनी कम उम्र की गाहकों के हॉथ पर दो वासी पकौड़े मुफ्त मे धर कर उन्हे अपनी मड़ई के पीछे खींच ले जाता था।
पता नही जंगली धनवाद के आदिवासी थे या यहॉ दूसरे अंचलो और प्रदेशों से आए ऊँची जाति के शोषक घूसपैठियें!
धईया के राममंदिर मे रामचरितमानस का पाठ चल रहा थाः

बूढऊ पंडित ऑखें बन्द किये सस्वर शुरू हुए ही थे कि मंदिर मे बैठे इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स के तमाम चूनिन्दे कामुक अपनी झालें सम्हाल कर घुटनों पर जा टिके
ःघन घमंड नभ गरजत घोरा प्रियाहीन तरपत मन मोरा...
पहल की चन्दन सिंह ने. उनकी झाल अपने दूसरे झाल से जा टकराई।
पता नही वो अपनी ऑखें मूॅदे किसकी याद मे अपनी झालें कूटे जा रहे थे! राम और सीता की याद मे या गॉव मे छोड़े अपनी पत्नी और तीन बेटों की याद मे या फिर हमारी दाई की याद मे!
भीम और नकूल की नौकरी परमानेन्ट हो गई।बाद के दिनो मे मुझे ये भी पता चला कि एक नए कानून के तहत इन्डियन स्कूल ऑफ माईन्स मे उन सबको परमानेन्ट कर दिया गया. जो वहॉ डेलीवेजेस पर काम करते थे।मैने भी राहत की सॉस लीः
अब मेरे पास न दुर्गा आएगा और न भरथू हीःदादा!आज को शाम हमरा जनाना ने आपको वास्ते मॉसो रॉधा है दादा।
एक असहायता के सामने एक संस्कृति को कलपते मै अपने बचपन से देखता आ रहा हूॅ और आज तक देख रहा हूॅ।एक शोषण का इससे ज्यादे भद्दापन और क्या हो सकता है!!

प्रमोद कुमार सिंह